**"ॐ"** **"पिताश्री"** **शिवबाबा याद है ?**

**15-06-2023** **शिवबाबा की वाणी**

***"मीठे बच्चे... आपके पास "माँ" है, "बाप" है, "टीचर" है, "सतगुरु" भी है, और जिन बच्चों के पास ये सब हो, वही दुनिया में सबसे धनवान बच्चा होता है। जहाँ ये चारों है, वहाँ कोई धन की कमी नहीं होती- ना स्थूल धन की कमी होती है, ना ज्ञान रत्नों के खजानों की कमी होती है। वो बच्चे इस सृष्टि के राजा बच्चे होते हैं!"***

अच्छा! आज बाप, टीचर और सतगुरु मिलने आए हैं। सबसे पहला शब्द, जब बच्चा आता है, पहले क्या बोलता है? "माँ"! दूसरा शब्द क्या निकलता है? बाप - "बाबा"! उसके बाद बच्चे की यात्रा कहाँ जाती है? माँ और बाप तो है, उसके बाद- "टीचर" क्योंकि वो इस दुनिया में आया है ना, तो इस दुनिया के हिसाब से, उसको इस संसार की नॉलेज चाहिए। इस संसार में कैसे रहना है.. कैसे बोलना है... शरीर निर्वाह अर्थ कैसे करना है.. उसको टीचर चाहिए। टीचर मिला...। लास्ट स्टेज होती है- "सतगुरु"! बाप-टीचर- सतगुरु ये 3 शब्द तो पक्का बैठ गए ना। पर इन तीनों से ऊपर "माँ" है। अगर माँ बच्चे को दुनिया में नहीं लेकर आएंगी,तो बच्चे का बाप कौन बनेंगा? पढ़ाएंगा कौन? सतगुरु कौन बनेंगा? बाप टीचर **सद्गुरु** तो याद रहे ही रहे, पर जो इस सृष्टि में पहला शब्द है "माँ" वो नहीं भूले। क्योंकि, माँ ना हो तो पिता बच्चा कैसे लाएगा? समझ में आया? आपके पास "माँ" भी है, "बाप" भी है, "टीचर" भी है, "सतगुरु" भी है,और जिन बच्चों के पास ये सब हो, वही दुनिया में सबसे धनवान बच्चा होता है। कौनसा धन? दुनिया का धन नहीं! और जहाँ ये चारों है ना वहाँ कोई धन की कमी नहीं होती। ना स्थूल धन की कमी होती है, ना ज्ञान रत्नों के खजानों की कमी होती है। वो बच्चे इस सृष्टि के राजा बच्चे होते हैं, जिनके पास ये सब होता है। चारों में से एक कम है ना, तो भी संपूर्ण नहीं कहा जाएगा। पर जिसके पास चारों है वो क्या है? वो सबसे बड़ा धनवान है। "माँ" से इस दुनिया में आया, "पिता" ने कंधे पे बिठाया, "टीचर" ने शिक्षा देकर गद्दी पे बिठाया, और "सतगुरु" ने ज्ञान धन देकर अपने साथ चलाया। तो आप बच्चों के पास किस चीज की कमी है? है? पूछो, अपने आप से पूछो। अगर ये सब होते हुए भी दिल में खालीपन है, तो बाप क्या कहेंगा? "नसीब अपना अपना"! "भाग्य अपना-अपना"! क्योंकि बाप देने में कमी नहीं कर रहा है,

आप अपनी झोली को फैला नहीं रहे हैं। झोली को बांध के रखेंगे तो खजाना कहाँ से आएगा? ये सब होते हुए, बाद किस और की याद आती है, या बुद्धि कहीं और जाती है, तो बाप क्या कहेंगा? अभी भी थोड़ा निश्चय की कमी है। प्रेम की नहीं कहेंगे, क्योंकि प्यार तो है तभी तो आप यहाँ हो। तभी बाप यहाँ पर है। किसकी कमी है? निश्चय की कमी है। कौन सा निश्चय? ये हर एक बच्चा अपने आप को चेक करे। कहाँ ना कहाँ लगता है ना- कहाँ कोई और बाप हुआ तो...! मैं कहाँ पीछे ना रह जाऊँ तो...! कहाँ उसके अंदर बाप निकला तो...! इसको कहेंगे निश्चय की कमी। और कोई ये एक या दो के लिए नहीं बोल रहे हैं, जिन बच्चों के अंदर ये कमी है उन बच्चों को बोल रहे हैं।

"अंगद" बनना है। क्या बनाना है? अंगद जो होता है ना, उसको रावण की सारी ताकत मिलाके भी उठाएंगी ना, वो भारी-भरकम पर्वत बन जाएंगा, चट्टान बन जाएंगा, कि उसको कोई हिला नहीं सकता। क्या अंगद के मिसल दृढ़ता आई है? क्या अंगद के जैसे चट्टान बनने की दृढ़ता आई है? हवा का पहाड़ नहीं बनना है, क्योंकि रुई के पहाड़ को तो छोटी सी हवा का झोंका उड़ाके ले जाता है। चट्टान बनना है कठोर चट्टान, कि चाहे कितनी भी हवा चीरने वाली क्यों ना आए, पर चट्टान पर कुछ असर ही ना पड़े। इसको कहते हैं अंगद के मुआफ़िक "दृढ़ता", "निश्चय"- कि जो सबको चैलेंज करें- ये लो मैंने अपना पाँव जमाया है, और आप उठाके दिखाओ। क्या ऐसी दृढ़ता है? है? फिर चाहे पेपर कोई भी आए, पेपर की रूपरेखा नहीं देखना। नहीं बाबा ये पेपर आया ना तो थोड़ा इसलिए हिल गया, बाकी कोई और पेपर होता ना तो मैं नहीं हिलता। ये नहीं है। कोई भी पेपर माना कोई भी पेपर, किसी भी विकार का पेपर, कैसा भी पेपर। पेपर कोई अलग-अलग प्रकार का नहीं। पेपर माना पेपर। पेपर के अंदर कुछ भी लिखा होंगा ना? अब जरूरी तो नहीं है ना, कि आप जो चाहोगे वही आएगा, आप जो कहोगे वही आएगा। नहीं...।

पढ़ाई तो देखो। अगर आप एक डॉक्टर बनने की, इंजीनियर बनने की पढ़ाई पढ़ रहे होते, तो सोचते ना कि हाँ,आपने जो पढ़ाया है वही आएगा। ये पढ़ाई तो "विश्व का महाराजा" बनने की पढ़ाई है। सारे विकारों पे जीत पाना ये लक्ष्य है, और पेपर भी ये है। सिर्फ चैप्टर का नाम सुनके खुश नहीं हो जाओ- ये तो मुझे बहुत अच्छे से आता है ना, इसका तो पेपर मैं बहुत आराम से दे दूँगा। उस चैप्टर के अंदर भी चैप्टर है... क्या उसकी पढ़ाई पढ़ी है? क्या वो पढ़ाई पढ़ी है सबने? कोई सिर्फ यहाँ बैठने वाले नहीं, जो बाहर बैठने वाले भी है, ये सबके लिए है। ये पढ़ाई पढ़ी है तो कोई फैल नहीं होंगा।पढ़ाई माना सिम्पल - पेपर में कोई भी, कोई भी पेपर में सवाल आ सकता है, और आपको बड़े प्यार से देना है। अगर बाप पे निश्चय है तो। हिला तो फैल! जो फैल हो गए वो वापिस पेपर की

तैयारी करें, क्योंकि हो सकता है... और ये जरूरी नहीं है... पेपर कोई दूसरा रूप लेकर भी आ सकता है।

तो आज टीचर आएं हैं, बाप तो आएं ही हैं, आज टीचर आएं हैं आपकी पढ़ाई की डिटेल बताने, कि बच्चे पढ़ाई इतनी पावरफुल होनी चाहिए, और याद इतनी पावरफुल होनी चाहिए, कि किसी भी पेपर में फैल नहीं हो सकते।

अब आए "सतगुरु"! "सतगुरु" माना क्या? सत सत! सतगुरु को सबसे उच्च श्रेणी में रखा गया है, क्योंकि जन्म तो माँ भल देती है, पर सतगुरु साथ ले जाता है। एक लेके आती है, और एक लेके जाता है, समझ में आया? पहला और आखरी! क्या? पहला और आखरी! बाप की प्रॉपर्टी खाई, टीचर की शिक्षा ली, बारी आई सतगुरु की। "सतगुरु" का अर्थ होता है सब सत्य बताना, कि जब आए हैं ना, तो जाना पड़ेगा ही, ये सत्य है। जो किया उसका फल प्राप्त करना पड़ेगा ही, ये सत्य है। आप क्या लेके आए थे? आपकी झोली में क्या जाएगा? ये सत्य है। जो जन्म और मृत्यु का ज्ञान दे वो सतगुरु है, वो सत्य है। अब अंतिम समय सतगुरु का पार्ट है। आया है सबको ले जाने के लिए।"सतगुरु" माना सच्चा मार्ग दिखाने वाला गुरु। आपके सामने सतगुरु बाप बैठा है, और आपका हाथ पकड़के आपकी सच्ची यात्रा पर लेके जा रहा है।

अगर आप बच्चे ये सोचेंगे- नहीं, थोड़ा घूम के आ जाते हैं, तो सतगुरु की उंगली पकड़ने वाले बच्चे बहुत हैं। जो उंगली आप छोडेंगे ना, वो उंगली कोई और भी पकड़ सकता है। और अगर वापिस आकर के कहोगे, कि नहीं, ये मेरी उंगली है, ये मेरी उंगली मुझे वापिस दो... तो ये कायदा नहीं है, और ये नियम नहीं है। ये ना बाप की पुस्तक में है, ना इस दुनिया के बाप की पुस्तक में है। छोड़े ही क्यों जो वापिस लेनी पड़े? ये सतगुरु की उंगली है, छूट गई तो वापिस उंगली नहीं मिलेंगी। सच्चा बाप आया है, सच्चा मार्ग दिखाने। अब वर्सा किससे मिलेगा? वर्सा किससे मिलेगा बताओ सभी? पूरी इस यात्रा में, इस संसार की यात्रा में, चार चीज महत्वपूर्ण है माँ, बाप, टीचर और सतगुरु। और बाकी कर्म। सतगुरु ही कर्म का ज्ञाता है। सही और गलत बताता है। और अगर नहीं माने तो फिर महाकाल भी बन जाता है। ये लास्ट ऑप्शन है। क्या? क्योंकि हिसाब किताब तो होता है ना, किसी का कम किसी का ज्यादा। अब वर्सा किससे मिलेंगा? बाप से मिलेंगा? पक्का, बाप से मिलेंगा ना? क्योंकि प्रॉपर्टी किसके पास है? और बाप का वर्सा क्या है? 21 जन्म सिक्योरिटी! 21 जन्म की क्या? सिक्योरिटी... पूरी सिक्योरिटी! कोई भी ऊपर नीचे नहीं। 21 जन्म की बादशाही! कोई मजाल

आपके राज्य में आके आपको कहे कि खाली करो! ये 21 जन्मों की गारंटी बाप देता है। तो बाप से क्या मिला? 21 जन्मों की बादशाही!! समझ में आया सबको? समझ में आया?

अब बाप से प्रेम मिलता है। पहली बात बाप प्यार का सागर है.... शांति का... प्रेम का... गुणों का... आनंद का... सुख का... पवित्रता का वो तो सागर है ना! आंख तो महाकाल दिखाता है।

अच्छा वर्सा कोई महाकाल से नहीं मिलेंगा। और ऐसा नहीं है कि किसी के शरीर में आके आँख दिखाएंगा - मैं महाकाल हूँ...सुधर जाओ..., नहीं तो देख लेना। ये महाकाल के शब्द नहीं, ये तो सरासर धमकी है। और ये धमकी नहीं चलती। धमकी क्यों देते हैं? महाकाल बनता क्यों हैं? बाप के रूप में शिक्षा देंगा - ऐसा नहीं... ऐसा करो। कैसे? जब आपका बच्चा होता है, और कोई बाहर चोर या कोई कुछ आ जाते हैं, बच्चों को उठाके ले जाते हैं, तो आप अपने बच्चों को क्या शिक्षा देते हो? बाहर नहीं जाना... आपको उठाके ले जाएगा। थोड़ा सा डराया ना, ताकि बच्चे के दिल में थोड़ा बैठ जावे। बाप भी क्या करता है? बच्चे ये काम नहीं करना, नहीं तो महाकाल की आँख देखनी पडेंगी- ऐसे बाप समझाता है। पर ऐसे नहीं, कहाँ आकर के बड़ी-बड़ी आँख दिखाएंगा और गुस्सा.... उसको आँख दिखाने की जरूरत नहीं पड़ती।

महाकाल एक शब्द है स्टेज है कि वो वार्निंग नहीं देता। पहली बात समझो महाकाल कौन है। महाकाल कभी वार्निंग नहीं देता, धमकी नहीं देता। नहीं...। वो सिर्फ क्लियर करता है चिट्ठा, कि आपने ये किया है, आपकी ये पनिशमेंट है, और इसमें कोई मार्जिन नहीं है। समझ में आया? महाकाल की स्टेज को समझो पहले। महाकाल की स्टेज को समझो महाकाल क्या है? बापकी स्टेज वो गद्दी है... महाकाल वो गद्दी है कि जब वो उस गद्दी पे बैठेंगा तो आपको वार्निंग नहीं देंगा, आपको धमकी नहीं देंगा, बस क्लियर करेंगा - आपका ये पाप कर्म है, आपकी ये पनिशमेंट है, आपने ये पुण्य कर्म किया है आपका फल ये है। बाकी, मैं ऐसे कर दूँगा... मैं वो कर दूँगा... मैं सबको मार दूँगा... मैं सबको खत्म कर दूँगा.... मैं सबकुछ ले लूँगा- ये शब्द महाकाल को बोलने की आवश्यकता है ही नहीं। उस गद्दी पर बैठकर के ये शब्द उच्चारण ही नहीं हो सकते, क्योंकि वो गद्दी है, न्याय की गद्दी है। धमकी, वार्निंग देने की गद्दी नहीं है। बस आपके हाथ में चिट्ठी है आपकी ये कमी है, आपने इतने जीवन काल में ये कमाई की है, ये पुण्य किया है, आपका रास्ता ये है, आपका ये है- ये महाकाल की स्टेज है। उसमें आप कोई रिश्वत का काम नहीं दे सकते- थोड़ी सी रहम करो ना... थोड़ी दया दिखाओ ना... आपने तो बाप बनके बहुत प्यार किया था ना, अब आपको क्या हो

गया? आप ऐसे क्यों हो गए? आपको ऐसा नहीं करना चाहिए ना। ऐसे महाकाल की स्टेज नहीं है। सिर्फ आपके हाथ में चिट्ठी होगी और यात्रा होगी, मार्ग होगा। या तो सजा या तो स्वर्ग! और स्वर्ग का गेट भी तो... सबकुछ साफ हो करके ही जाएगा ना ।

तो बच्चों वर्सा महाकाल से नहीं मिलता, वर्सा तो बाप देता है। और देखो अभी जो लायक बनेंगे, बाप की श्रीमत पर चलेंगे, माँ की श्रीमत पर चलेंगे... जहाँ माँ-बाप है ना, तो दोनों की सलाह होती है। बाप ने मत दी; माँ ने मत दी... माँ ने मत दी ; बाप ने मत दी। जैसे लक्ष्मीनारायण कंबाइंड है, तो माँ-बाप तो अलग थोड़ी है। वो क्या है? वो कंबाइंड है आप अलग कैसे कह सकते हो?

अच्छा तो सभी बच्चे पहले बाप- टीचर- सतगुरु और महाकाल के पार्ट को गहराई से समझें। बनना क्या होता है? स्टेज होती है । जैसे जज होता है । इस दुनिया के जज को देखा? कोर्ट में जाएंगे वो देखेंगा- इसने ये भूल की हैं, इसकी सजा ये है। क्या जज के सामने रिक्वेस्ट कर सकते हो? नहीं ना। खल्लास केस ही खत्म होता है! तो महाकाल एक स्टेज है, जज की स्टेज है, न्याय की स्टेज है, और उनके सामने रिश्वत कहो, रिक्वेस्ट कहो, कुछ भी कहो वो नहीं जानता। बाप भी एक स्टेज है, प्यार का सागर है! प्यार का सागर है, प्यार करेंगा। और जैसे महाकाल गद्दी पे बैठता है, जो सजाकारी होते हैं उनको बस बोलता है कि अभी ये इनके साथ ऐसा होना है, इनकी ये पनिशमेंट है, तो आप अभी निपट लेना। समझ में आया?

अब आओ "माँ" के ऊपर। माँ को क्या बोलते हैं? माँ को "जननी" बोलते हैं। जिन्होंने कहा स्त्री नर्क का द्वार है, जिनके मुख से ऐसे कटु शब्द निकले कि स्त्री नर्क का द्वार है, तो सबसे पहले उन बुद्धू बच्चों को ये समझ में आना चाहिए कि जिस स्त्री को आप क्या बोलते हो ना नर्क का द्वार है, उसी द्वार से आप भी निकल के आए हो। कोई आप आसमान से या धरती को चीर के नहीं आए हो, या आसमान को चीर के आए हो, या किसी पर्वत को फाड़ के आए हो। नहीं...। आप भी उस नर्क के द्वार से ही पैदा हुए हो। अपनी सोच से नर्क का द्वार कहा, पर बाप क्या बोलते हैं? वो द्वार नरक का नहीं है वो स्वर्ग का द्वार है, क्योंकि श्री कृष्ण जो आता है वो कहाँ से आएंगा? उसी द्वार से आएंगा ना! और वो जाके स्वर्ग की गद्दी को हप्प कर लेता है। तो स्वर्ग का द्वार हुआ या नर्क का द्वार हुआ? किसका द्वार हुआ? तो पहले सभी अपनी सोच को ऊँचा बनाओ। अपनी दृष्टि को पावरफुल बनाओ। माँ से वर्सा नहीं मिलता- आपको कहे बाप सारी कमाई लाके माँ के हाथ में ही देता है। जो चाबी

होती है ना चाबी, वो कहाँ पर आती है? माँ के पास आती है। इस गहरे ज्ञान को समझो। माँ से छुपके पिता आपको कुछ नहीं दे सकता। ये सच्चा ज्ञान है, ये सच्ची समझ है।

आपकी माँ का नाम क्या है? वर्तमान में क्या है? "देवकी"! अच्छा देव और की (key )! की का मतलब क्या है? (चाबी ) समझ में आया? देव और key। देवताई दुनिया लाने की जो key है, देव को लाने की जो key है- वो "देवकी" है। कोई ऐसे ही नाम नहीं रखा है। "की" मतलब चाबी। और लास्ट में देवकी है ना, तो 21 जन्म तक जो की (key) है ना वो लक्ष्मी के हाथ में ही रहेगी। क्या रहेगी? की (Key)! क्या? चाबी! समझ में आया?

हाँ, इस अंतिम जन्म में हर एक आत्मा का हिसाब किताब आया, चला गया। हिसाब किताब ना! कई बच्चे सोचते हैं बाप मैया की इतनी तारीफ क्यों करते हैं? क्योंकि अपन ने आत्मा को देखा है, इनके कर्मों की कहानी को देखा है, इनकी यात्रा को देखा है, और आपने सिर्फ शरीर को देखा है। आपकी सोच और अपनी सोच में ये फर्क है। आपने सिर्फ देह को देखकर उनकी सोच का आंकलन लगाया है, पर हमने इस आत्मा को देखा है, और बाप ने सभी को देखा है, आपको भी तो देखा है ना। आप सबको भी तो देखा है ना? आत्मा को देखा है ना? पर फिर भी बापने आपसे प्यार किया है, कभी नहीं कहा- आपने इतना पाप कर्म किया है, आपसे अपन प्यार नहीं कर सकते, नफरत करेंगे, या ऐसे नहीं ऐसे करेंगे। नहीं ना? इसका मतलब क्या? आपने सिर्फ देह को देखा है। देह को देख करके अपनी सोच बनाई है, अपनी सोच को कितना नीचे या कितना ऊपर... ये आपके ऊपर है।

सबको मालूम है ना... या था... कि ये देवकी है। और देवकी का कर्तव्य क्या है? उसकी यात्रा क्या है? तो हर एक बच्चा अपने आप को देखे। क्योंकि याद रखना इस संसार में भी जहाँ "माँ" का अपमान होगा, या हुआ है, स्त्री का जहाँ अपमान हुआ है, चाहे वो स्त्री स्त्री का करें, चाहे वो पुरुष स्त्री का करें, चाहे कोई भी... देखना... कुछ भी हुआ है वही विनाश का कारण बना है। जहाँ रावण ने स्त्री पर, माँ पर दृष्टि डाली है, वही विनाश का कारण बना है। और चाहे ये यहाँ पर हो... और जहाँ जहाँ अपमान होता है वहाँ वहाँ बाप का इंटरफियर होता है। और जब बापका इंटरफियर होता है ना...... समझ में आया? जब हमें किसी के कर्मों की कहानी ना मालूम हो, हम उसके पास्ट, उसके प्रेजेंट, उसके भविष्य के बारे में ना जानते हो, तो हमें अपने आप की चेकिंग करनी चाहिए। अपना पुरुषार्थ बढ़ाना चाहिए। ठीक है।

अब दूसरी बात "ब्रह्मा मेरा मुरब्बी बच्चा है"! क्या है? ब्रह्मा मेरा मुरब्बे बच्चा है। आगे का रहस्य खोलते हैं। ब्रह्मा का बाप कहो, या कृष्ण का बाप कहो वो मेरा मुरब्बी रथ है, मुकर्रर रथ है। मुरब्बी बच्चा, मुकर्रर रथ, फर्स्ट सो लास्ट। सबके मन में जो भी संकल्प है, जो भी है, समय अनुसार हर एक बच्चे को सब मालूम भी पड़ जाएंगा। पर जानते हो क्या है? कई बच्चे बोलते हैं ना- बाबा आप कुछ तो समझाओ ना... इतनी जगह से आवाज आ रही है कि उधर बाबा, उधर बाबा, उधर बाबा! बाप क्या बोलते हैं मालूम है? बाप आपके सामने हैं। वो आपका पेपर है। माला 108 की है। मणके बाप के बच्चे हैं। माला में पिरोने वाले हैं। बापसे ये नहीं पूछना कि मैं हूँ या नहीं। ये अपने आपसे पूछना कि क्या मेरा निश्चय ऐसा दृढ़ है कि मैं 108 की माला का मणका हूँ या नहीं? समझ में आया ना ?

अभी कुछ समय के बाद ये ड्रामा इतना वंडरफुल होता जाएगा, बच्चों के मन में तूफान भी आएंगे आंधी भी आएगी। कौनसी आंधी तूफान? संकल्पों की। पर एक आपके सामने "बाप नाम का पिल्लर" है, उस पे लिपटे रहे तो आंधी तूफान आके चला जाएगा, आपका कुछ घाटा नहीं होंगा। क्या समझ में आया? "एक बाप दूसरा ना कोई"! अच्छा ये जो आंधी तूफान है, ये छटनी करने आएगा, क्योंकि.... और ये जो तूफान, ये रहस्यों का तूफान होंगा। राज एक के बाद एक! कई बच्चों को अगर कुछ बतावे तो हाँ, मेरेको समझ में आ गया, अभी मुझे कुछ भी समझाने की जरूरत नहीं है। अभी तो मैं एकदम पक्का निश्चय हो गया हूँ। अभी तो मैं कैसे भी हिलूँगा नहीं, ना हिलूँगी। थोड़े समय के बाद एक छोटा तूफान आया, पूरे ही उल्टे लटक गए! थोड़े समय के पहले बोल रहे थे- मैं हिलुंगा नहीं। तूफान में उल्टे लटके हुए इंसान की तस्वीर खींचो वो कैसा होगा? क्या होगा? उसको आसमान पहले दिखाई देगा, और धरती दिखाई ही नहीं देंगी। समझ में आया? क्या इतने हल्के हो जो तूफान ने उल्टा ही लटका दिया? बाप ने क्या कहा? अंगद के समान! क्या बनो? चट्टान बनो, दृढ़ता की, निश्चय की, तो चाहे कोई कितना भी भारी तूफान आए वो हिला नहीं पाएंगा। ये 108 माला के मणको की निशानी है। जो कहाँ ना कहाँ बार-बार, बार-बार हिलते रहते हैं ना वो.... बाप क्या कहेंगे? इंतजार नहीं करेंगा।

अच्छा अब बाप कहेंगा अभी भी थोड़ा समय आपको देते हैं, इस थोड़े समय में अंगद के जैसे चट्टान बनके दिखाओ। समझ में आया? कोई भी तूफान माना कोई भी तूफान, कैसा भी तूफान। कैसा भी! जैसे तूफान उड़ता है ना, उसमें कंकर, पत्थर, सबकुछ आके लगते हैं ना। आप कहोगे मुझे लगा तूफान थोड़ा अच्छा आएगा, पत्थर नहीं मारेंगा। ऐसा कैसे हो सकता है? तूफान के अंदर सब चीजें

होती है। समझ में आया? अभी भी किसी को कुछ सवाल या कोई मन में शंका, या कुछ भी होगा, तो बाप कहेंगे इतना प्रेम करने के बाद भी अगर मन हिले तो बाबा कहेंगे, क्या कहेंगे? कि "हे मुरब्बी बच्चे दरवाजा खोल दो"! और वहाँ से क्या निकल के आएंगा, आपको बताएंगे नहीं, दिखाएंगे।

अपना संकल्प दृढ़ रखो। मैं कौन हूँ! और मुझे कौन मिला है! ऐसी अपने आप को चट्टान बनाओ, कोई भी तूफान मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकता। और माँ के प्रति इतना सम्मान होना चाहिए... अच्छा क्या बाप को नहीं मालूम माँ की जीवन कहानी? सबकुछ मालूम है। समझ में आया?

अच्छा बच्चों आज बहुत अच्छा लगा, क्योंकि बच्चे सोचते हैं - बाबा का आना इधर कम हो गया ना, तो पक्का वो कहीं और अपना टीम तैयार कर रहा है। ये संकल्प करना... उनको क्या कहेंगे? अपनी बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन करना। अपनी बुद्धूबुद्धि का परिचय देना, मतलब अपनी बुद्धू, बुद्धि का परिचय देना। ये नहीं सोचना बाप कम समय दे रहे हैं ना, अभी तो एक मास में एक ही बार आते हैं,और वो भी थोड़े समय के लिए, तो जरूर कहीं और बाप का पार्ट चल रहा होगा। अरे बच्चों! बाप, माँ और बच्चों को छोड़के कहीं नहीं जाने वाला। जहाँ माँ है वहाँ बाप है,और जहाँ माँ और बाप है वहाँ कौन है? बच्चे हैं। तो ये तो कॉमन बात है समझने की। अच्छा अपने को थोड़ी नौकरी करनी है कि कमाने के लिए कहीं दूसरी जगह जाना पडेंगा? नहीं ना..? तो अपने को तो माँ के साथ ही रहना है।

देखो वंडरफुल बात है। क्या? सारी की (key ) माँ के पास है। सारी "की" माँ के पास है मतलब कि जब माँ परमधाम जाएंगी, हम जब लेने आएंगे, तो बिना माँ को लिए परमधाम नहीं जाएंगे। जब आप शादी करने जाते हो, बिना दुल्हन के अपने घर आते हो? आते हो? अगर आ गए तो आपको बहुत गालियाँ पडेंगी। लोग तरह-तरह की बात कहेंगें -जरूर इसने कुछ ऐसा काम किया होंगा इसलिए दुल्हन को छोड़के आया। आपको समझ में आया बाप क्या बोल रहे हैं? बाप अगर परमधाम में जाएंगे तो बिना माँ के नहीं जाएंगे। फिर आप कहोगे- क्या इतने बच्चे फिर कहाँ रहेंगे विनाश होंगा तो? सबको बारात घर में इंतजार करना पड़ेगा। माना सूक्ष्म वतन! सबको सूक्ष्म वतन में इंतजार करना पडेंगा। फिर सवाल आया- तो अब मुरब्बी बच्चा कैसे आएगा? आया ना? आप बच्चों के एक-एक सवाल भी आ रहे हैं। क्या पहले वो घर में नहीं जाएगा? मुरब्बी बच्चे के लिए, माँ कुछ समय के लिए उनको चाबी देगी- जाओ अपने घर का नक्शे को आंखों में उतार के आओ। क्योंकि आपको सिर्फ एक सेकेंड के लिए घर देखने जाना है, बाकी आपका बाप तो मेरे पास है,

आप घर में क्या करोगे? घर तो खाली हैं! समझ में आया? जहाँ माँ- बाप नहीं हैं उस घर में जाके बैठोगे क्या? उस घर में जाकर के कैसे बैठेंगे? माँ-बाप के साथ जाना अच्छा लगेगा ना। अच्छा बच्चों....

और ये नहीं सोचना - तो बाबा और जगह-जगह जो भी चल रहा है वो क्या है? वो ड्रामा की छोटी छोटी सीन सीनरियाँ है। जब कहाँ मेला लगता है तो आप सीन सीनरियाँ देखने जाते होना? किसके साथ जाते हो? (माँ बाप के साथ ) तो आप कहोगे नहीं बाबा मेरे को यही पसंद आ गया, ये सीन सीनरी अच्छी लगी, क्योंकि ये सेम आपके जैसी फोटो लग रही है। आपके पास तो ओरिजिनल है! आप फोटो देखने जाओगे? ये ड्रामा की छोटी-छोटी सीन सीनरियाँ हैं, वो आएंगी और जाएंगी... आएंगी और जाएंगी...। चंचल बुद्धि नहीं बनना कि उधर चिपकना है। ना...। आपने बाप का हाथ पकड़ा है। मेले में घूम रहे हो। ये सृष्टि रूपी मेला है, बाप की उंगली पकड़कर मेले में खो गए ना तो क्या होंगा? समय बर्बाद हो जाएगा। तो बाप तो फिर भी ढूँढ ही लेंगा। पर क्या बाप के दिल का वैसा प्यार रहेंगा? डाँट लगाएंगा- क्यों छोड़ी उंगली? क्यों गए उधर? है ना, आता है ना बाप को? किसने बोला था उंगली छोड़ने के लिए? फिर...? फिर क्या करेंगा बाप? भरोसा नहीं करेंगा। ये कभी भी उंगली छोड़ सकता है! इसलिए उसका हाथ पकड़ लेता है कसके। समझ में आया?

अच्छा बच्चों सब ठीक हो? खुश होना? आज मुरब्बी बच्चे की जगह हमने ले ली। आज मुरब्बी बच्चा बहुत खुश है। अच्छा फिर मिलेंगे...

(बाबा जल्दी जल्दी आते रहना) जल्दी जल्दी आएंगे, आपका भी तो निश्चय देखेंगे ना। क्योंकि बच्चे अपनी बुद्धि को बड़ा तेज दौड़ाते हैं। तो आज बाप येही कहने आए हैं सबको - जहाँ माँ है, वहाँ बाप है। बस एक चीज याद रखो जहाँ की (key )है, वहाँ सब खजाने हैं, अगर की (key ) गायब हो गई... अगर "की"...आगे का शब्द, अगर देवकी गायब हो गई तो सारे खजाने गायब हो जाएंगे! अभी सभी अपना अच्छा विचार सागर मंथन चलाना। ठीक है।

(फिर बाबा ने सभी को ड्रिल कराई )

हर एक बच्चा अपने ओरिजिनल स्वरूप में उतरे। मैं कौन हूँ?... एक छोटा सा सितारा,.... जो कभी किसी को दिखाई नहीं देता... पर वंडरफुल सितारा....जिसमें सारे संसार का ज्ञान समाहित है।.... मैं ऐसा स्टार हूँ.... जिसमें सर्व शक्तियाँ हैं... मैं वो सितारा हूँ.... जो इस संसार में अभिनय करने उतरा हूँ... खेल रहा हूँ... मैं वो सितारा हूँ... जिसमें बाप के संपूर्ण गुण है... मैं आत्मा.... ऐसी पावरफुल

हूँ... अमर हूँ... मुझे काल कभी नहीं खा सकता... मैं इस सृष्टि पर, सभी सितारों का पार्ट देखकर, गदगद हूँ... क्योंकि हर स्टार अपना अपना अभिनय कर रहे हैं... खेल रहे हैं... आप भी खेल रहे हो... अब समय आ गया है... खेल की समाप्ति का... खेल समाप्त होने को है... खेल के लास्ट पड़ाव पर आप हो..."दृढ़ निश्चय"- इस खेल में जीत मेरी है!... "पावरफुल संकल्प"- इस खेल का नंबरवन खिलाड़ी हूँ मैं... क्योंकि मैंने ये खेल एक बार नहीं खेला... मैंने ये खेल बार-बार खेला है.... मुझे इस खेल के बारे में सब मालूम है... मेरी हार हो ही नहीं सकती... क्योंकि इस खेल का मास्टर मेरे साथ है... क्योंकि इस खेल को बनाने वाला उस्ताद मेरे साथ है... ये खेल मुझे बहुत अच्छे से आता है... ये सृष्टि रूपी खेल है... इस खेल में मेरी जीत निश्चित है... क्योंकि मेरे जैसा अनुभवी इस खेल में कोई नहीं है... मैं खेल का नंबरवन खिलाड़ी हूँ... खेल की सारी मोहरे मेरे हाथ में है... माया चाहे कितनी भी शातिर हो... उसको कहाँ से तोड़ना है ये मुझे मालूम है... ।

जैसे रावण की जान नाभि में है... ये मुझे मालूम है ... सारा खेल नाभि का है... रावण के सामने राम आया तो रावण मर गया... सारा खेल नाभि का है... आप बच्चे अपना स्वमान याद करो... इस शरीर की पैदाइश नाभि है... आपके लाइट के शरीर को जीवित रखने का... पावरफुल बनाने का राज भी नाभि है... इसलिए विष्णु की नाभि से ब्रह्मा निकला... और ब्रह्मा की नाभि से विष्णु निकला... । मैं आत्मा हूँ, इस पाठ को नहीं भूलना... जोड़ना है जोडो । जोड़ को ढूँढो... जोड़ को ढूँढो... नाभि का रहस्य समझ में आते ही रावण खत्म है... आत्मा को पावरफुल बनाओ... ।

आत्मा पुरुष है... देह प्रकृति है... पुरुष-प्रकृति मिलकर इस सृष्टि का संचालन करते हैं... और इन दोनों का संचालक बाप है... समझ में आया? क्या बनना है? बाप ने इतने समय से एक पाठ पढ़ाया - मायाजीत बनो, प्रकृतिजीत बनो । प्रकृति आपकी दासी है, आप मालिक है । किसको समझ में आया- प्रकृति दासी का मतलब? सभी ने सोचा धरती, आकाश, वायु, अग्नि, पानी ये सब हमारी दासी है । सब बच्चे समझने में फैल हो गए । प्रकृति आपकी दासी है । प्रकृति आपकी दासी बन जाए ऐसा पुरुषार्थ करो । प्रकृति माना पाँच तत्व से बना ये शरीर प्रकृति है, क्योंकि इन पाँच तत्वों से बना हुआ ये देह प्रकृति है । प्रकृति जीत बनो, मायाजीत बनो, ये देह प्रकृति है और माया पुरुष को पकड़ती हैं । किसको? आत्मा को । माया किसको पकड़ती है? तो प्रकृति और पुरुष... मायाजीत बनो । इसलिए आपको भाई भाई क्यों बोला? क्यों? आत्मा क्या है? आत्मा पुरुष है । ये प्रकृति है । माया जीत बनो, प्रकृति जीत बनो । है पुरुष! है आत्मा! इस शरीर पर भी, इस प्रकृति पर भी विजय प्राप्त करो । हे आत्मा इस माया पर भी विजय प्राप्त करो । सारा खेल प्रकृति पुरुष का है । प्रकृति को

समझो। प्रकृति क्या है? पुरुष क्या है? ये दोनों आपस में ऐसे मिले हैं...कैसे? अगर अलग हो जाए तो दोनों का अस्तित्व खत्म है। पुरुष प्रकृति से अलग हो जाएगा, तो प्रकृति मिट्टी, पुरुष जड़ बन जाएगा। खेल समझ में आ रहा है? अगर प्रकृति से पुरुष अलग होगा तो... तो प्रकृति मिट्टी, और पुरुष जड़ बन जाएगा। और इन दोनों को मिला दिया तो चैतन्य! चैतन्य बन जाएगा! इसलिए कंबाइंड रूप दिखाया है। प्रवृत्ति मार्ग - लक्ष्मी और नारायण।

आज बहुत रहस्य खुल गए हैं ना। है ना? वैसे तो ब्रह्मा बाप की पोटली हमेशा भरी रहती है। पर मुरब्बी बच्चे को मालूम है, क्योंकि सब जगह चक्कर लगाते रहते हैं। कैसे? नारायण! नारायण ! करके। मतलब क्या? के सबको याद दिलाते हैं नारायण को याद करो। नारायण मतलब क्या? इस सृष्टि के जो रण का मालिक है, इस तीनों लोकों का जो रण का मालिक वो नारायण है। वो जो तीनों लोको का रचयिता नारायण। इसीलिए मुरब्बी बच्चा जहाँ -तहाँ जाकर नारायण! नारायण! करके परिचय देता है। है ना? वो अपने आप को नारद समझता है। दुनिया में भक्ति मार्ग में नारद की कहानी अलग है। वास्तव में नारद मतलब उस रण में रहने वाला एक प्रथम पुरुष, प्रथम आत्मा मालिक। वो अपने आपको नारायण नहीं, नारद कहता है, कि मैं भगवान नहीं हूँ, मैं भगवान का बच्चा हूँ, मैं उसकी संतान हूँ। मेरा पिता नारायण है, सारे रणों का मालिक है, इस भूमि का, तीनों लोकों, का तीनों कालों का, मेरा नारायण मालिक है। वो हमेशा अपना, बाप का परिचय ऐसे सबको देता है। क्या नारद जैसे बने हो? क्या मुरब्बी बच्चे जैसे बने हो? वो बच्चा कभी नहीं बोलता नारद! नारद! नहीं...। नारायण! नारायण! मानो अपना परिचय नहीं देता, किसका परिचय देता है? नारायण का। सबसे पहले मुख से नारायण नारायण निकलेगा। तो आपका नारायण आपके सामने बैठा है, पहचानो। इस संसार का नारायण, तीनों लोकों का नारायण आपका पिता है, पहचानो। लास्ट में क्या होंगा? नारद भी गुम, नारायण भी गुम, लक्ष्मी भी गुम! तो साथ में चलना है ना?

**अच्छा जो यहाँ बैठे हैं, और बाहर बैठे हैं, सभी को नारायण का, नारद का, मीठा-मीठा याद प्यार और स्वर्ग की सोने की गुड मॉर्निंग! स्वर्ग, सोना मतलब गोल्ड की गुड मॉर्निंग! गोल्ड नहीं रियल गोल्ड की गुड मॉर्निंग! आप बच्चे हमेशा बाप की गोदी में रहो, और खुश रहो।**

फिर मिलेंगे....